REVIEW OF RESEARCH

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतों का समायोजन स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन

डॉ. अनूप कुमार पोखरियाल[1] , कुलदीप कुमार[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग,
हिमगिरी जी विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड.
[2]शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, हिमगिरि जी विश्वविद्यालय देहरादून, उत्तराखण्ड.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

सारांश

प्रदेश सरकार द्वारा संचालित आश्रम पद्धति के विद्यालय आवासीय प्रकृति के है। इन विद्यार्थीयों के समायोजन की क्या स्थिति है ? तथा उनका समायोजन उनकी अध्ययन आदतों को कैसे प्रभावित करता है ? यह जानने विषयक प्रस्तुत शोध–कार्य को राजकीय आश्रम पद्धति के सहारनपुर, मेरठ व बिजनौर जनपदों के विद्यालयों के कक्षा–11 के 140 विद्यार्थीयों (80छात्र+60छात्राऐं) पर सम्पन्न किया गया है । निष्कर्ष रूप में पाया गया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतें अच्छी होती है। छात्र एवं छात्राओं के उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर का अध्ययन आदतों पर सामान्य प्रभाव पड़ता है। ।

मुख्य शब्द– माध्यमिक स्तर, अध्ययन आदत, समायोजन स्तर.

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र व समाज की उन्नति उसकी शिक्षा पर निर्भर करती है, जो राष्ट्र व समाज जितना अधिक शिक्षित होता है, वह उतनी ही उन्नति करता है। प्रगतिशील एवं विकसित देश के समग्र विकास के लिए उस समाज के सभी वर्गो को शैक्षिक विकास के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। । विद्यालयों का मनोसामाजिक पर्यावरण भिन्न–भिन्न होता है जो कि नीतियों, आदर्शो व अन्तः सम्बन्धो पर निर्भर करता है । विद्यालय के मनोसामाजिक पर्यावरण में अन्तः क्रिया करके ही विद्यार्थी ज्ञानार्जन करता है, जो उसकी शैक्षिक उपलब्धि के रूप में सामने आता है। ।

वर्तमान समय में हमारे देश में विभिन्न प्रकार के विद्यालय चल रहे है इन आवसीय विद्यालयों में राजकीय आश्रम पद्धति, कस्तुरबा गांधी आवासीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय आदि। जिनमें विद्यार्थी अपना चहुँमुखी विकास कर रहे है । ये विद्यालय छात्र एवं छात्राओं दोनो के लिए चल रहे है, वर्तमान समय में ये विद्यालय शिक्षा में अहम भूमिका निभा रहे है। । इनकी स्थापना का श्रेय माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) की संस्तुतियों को जाता है, जिसके फलस्वरूप वर्ष पहला राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय आरम्भ किया गया था।

आज के समय में राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय वंचित वर्ग के छात्र–छात्राओं की शिक्षा में अहम भूमिका निभा रहे है, प्रथम राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय की स्थापना सन 1964 में जिला रामपुर उत्तर प्रदेश में हुई थी।। आज कई राज्यों में राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय चल रहे हैं, परन्तु इनकी संख्या में पर्याप्त वृद्धि करने की आवश्यकता है ।

राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों में विद्यार्थी विविध प्रकार की पारिवारिक पृष्ठभूमि से आये होते है। । इन विद्यालयों में सभी छात्र एक परिवार की तरह रहते है।, 1964 में जिससे इनमें समग्र समायोजन होने की सम्भावना अधिक होती है। छात्रों को वहाँ पर अध्ययन का अधिक समय मिलता है, विद्यालय में शैक्षिक वातावरण बना रहता है, । शिक्षक–छात्र सम्बन्ध सम्यक बना जाते है, छात्रों की वैयक्तिक आवश्यकताओं के साथ शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया जाता है। उनमें आपस में परस्पर सक्रियता–सहयोग की सदभावना विकसित होती है।, उनमें मानवीय मूल्यों का प्रस्फुटन होता है, उनके रहन–सहन एवं सामाजिकता में गुणात्मकता आती है जिसमें धीरे–धीरे वे अपने सामने उपस्थित परिस्थितियों को जानने व समझने लगते है और उनके साथ यथाशीघ्र तालमेल बिठा लेते है, । इसे उनकी समायोजन प्रक्रिया कहा जाता है । राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय में प्रवेशित विद्यार्थी अपने घर–परिवार से दूर रहते हुए भी प्रायः सहज ही रहते है जो यह दर्शाता है कि उनमें समायोजन शीघ्र होता है।

समायोजन निरन्तर जारी रहने वाली एक प्रक्रिया है, जो विद्यार्थीयों को राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों में विद्यमान वातावरण को जानने, समझने तथा उसके साथ सुसंगत सम्बन्ध उत्पन्न करती है, यही समायोजन विद्यार्थियों के व्यवहार, अभिरूचियों एवं प्रयास को निर्देशित करता है, यह समयोजन शारीरिक, वैचारिक एवं व्यावहारिक स्तरों पर होता है।।

आदतें बच्चे की प्रारम्भिक अवस्था (शिशु अवस्था) में उत्पन्न हो जाती है, बच्चो में ये आदतें उसके बोलने व व व्यवहार करने में प्रत्यक्ष दिखई देने लगती है, बच्चा प्रारम्भ में अनुकरण से सीखता है धीरे–धीरे जैसे–जैसे वह बडा होने लता है वह सीखने की अपनी आदतें विकसित कर लेते है। । ऐसा देखा गया है कि प्रत्येक बच्चा सीखने में अलग–अलग आदतों का प्रयोग करता है, कुछ बच्चे एकान्त में पढना चाहते है, कुछ पुस्तकालय में, कुछ किताबों में महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करके पढ़ते है।, तो अलग से कुछ नोटस तैयार कर लेते है, कुछ निरन्तर काफी समय तक बैठकर पढते है, तो कुछ थोडी–थोडी देर के अन्तराल से पढते है, उन्हे अधिगम आदत का नाम दिया जाता है।, दूसरे शब्दो में अधिगम आदत वह है जो प्रत्येक बच्चा अपनी सीखने की क्रिया के दौरान स्वयं बनाता है और व्यवहार करता है, अधिगम कर्ता सीखने के दौरान जिन आदतों को अपनाता है वही उसकी अधिगम आदतें कही जाती है।।

राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों में प्रवेशित विद्यार्थी अपनी विद्यमान परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करके अपनी अध्ययन आदतें विकसित करने का प्रयास करते है, किन्तु यह प्रक्रिया कितनी सार्थक चलती है, विद्यार्थीयों की अध्ययन आदतों पर समायोजन कितना प्रभावित होता है।, यही जानने का प्रयास प्रस्तुत शोधकार्य में किया गया है।

सम्बन्धित शोध की समीक्षा

शोधार्थी को इस सम्बन्ध में निम्न शोधकार्य उपलब्ध हो पाये। है ।

पटेल (1981) ने गुजरात राज्य के खेड़ा जनपद के कक्षा 8 के 76 विद्यार्थियों पर अध्यन करके पाया कि बौद्धिक रूप से पिछड़े ग्रामीण अथवा शहरी दोनों क्षेत्रों की बालिकाओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, यद्यपि सामान्य रूप में यह अन्तर विद्यमान है। ।

देव एवं ग्रवाल (1990) ने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के सत्र 1985–86 के बी0एम0मी0 (गृहविज्ञान) के अन्तिम वर्ष में 90 विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि केवल विषयों के चयन को छोड़कर अध्ययन आदतों के सभी पक्षों के साथ शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक घनात्मक सहसम्बन्ध होता है। ।

राज्यगुरू (1997) ने गुजरात राज्य के भावनागर के कक्षा –8 के 183 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर अध्ययन करके पाया कि अध्ययन आदतों के द्वारा गणित में उपलब्धि का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। ।

सिंह (1998) ने उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जनपद के कक्षा–6 के 200 विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी विषयगत उपलब्धि पर घनिष्ठ प्रभाव पड़ता है। ।

सरोदे(1999) ने भारत के जलगांव जिले के कक्षा–12 के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि उनकी अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ।

नन्दिता एवं तनिया (2004) ने उड़ीसा राज्य के भर्द्रक जिले के कक्षा–9 के 120 विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि उनकी अध्ययन की आदतें तथा अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ धनात्मक सार्थक सम्बन्ध है। ।

पंचलिंगप्पा (2006) ने 135 माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया, जिसमें 94 उच्च उपलब्धि वाले तथा 41 निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थी थे, उन्होंने पाया कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। ।

अग्रवाल एवं कुमार (2010) ने अपने अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ घनिष्ठ सहसम्बन्ध पाया ।

सुदर्मन एवं बसन्ती (2011) ने कक्षा–11 ने विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि यद्यपि ग्रामीण विद्यार्थी, शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा अध्ययन आदतों पर अच्छे है किन्तु उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न पायी गयी है। ।

रावत (2017) ने लखनऊ नगर के कक्षा–9 के 90 छात्र और 90 छात्राओं पर अध्ययन करके पाया कि सहायता प्राप्त एवं स्ववित्त पोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा राजकीय माध्यमिक विद्याालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें अधिक अच्छी हैं ।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन आदतों के चर पर शोध कार्य किये गये हैं और यह शोध का प्रभावी 'चर' हो सकता है, इसे दृष्टिगत रखते हुये ही प्रस्तुत शोध कार्य, विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सम्पन्न किया गया है ।

शोध समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतों का समायोजन स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन''

अध्ययन उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की–

- अध्ययन–आदतों का सर्वेक्षण करना
- समायोजन स्तर का पता लगाना
- उच्च एवं निम्न समायोजित विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की तुलना करना
- समायोजन का उनकी अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना

परिकल्पनाएं

- छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
- उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर पर छात्रों की अध्ययन आदतों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
- उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर पर छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का अनुगमन किया गया है ।

जनसंख्या व न्यायदर्श

प्रस्तुत शोध कार्य सहारनपुर, मेरठ, व बिजनौर जनपद के अन्तर्गत संचालित राजकीय आश्रम पद्वति के माध्यमिक विद्याालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के विद्याार्थियों (सत्र 2017–18) की जनसंख्या सहजता से उपलब्धता के आधार पर निम्नवत न्यायदर्श चयनित है। ।

सारणी 1

छात्र	छात्राएं	कुल विद्यार्थी
80	60	140

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व समायोजन के मापन में निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है ।

(1) Study Habit scale (Dimple Rani and M.L. Jaidka)
(2) Adjustment Inventory for school students (A.K.P. Sinha and R.P.Singh)

आंकडों का सांख्यकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत कार्य में संकलित आंकडों का विश्लेषण निम्नवत किया गया–

सारणी 2

विद्यार्थियों की संख्या		समायोजन स्तर		अध्ययन आदतें	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
छात्र	80	154.80	9.15	153.76	14.37
छात्राएं	60	155.85	10.17	171.56	14.35

समायोजन स्तर पर छात्र छात्राओं एवं उनकी अध्ययन आदतों का विवरण–

	संख्या	अध्ययन आदतें M	SD
उच्च समायोजन(M+ISD=163.95^{+}) स्तर के छात्र =	15	178.17	14.82
निम्न समायोजन (M-ISD=145.65) स्तर के छात्र =	13	175.34	16.43
उच्च समायोजन (M+ISD=166.62^{+})स्तर की छात्राएं =	11	174.50	18.09
निम्न समायोजन (M-ISD=145.08^{-}) स्तर की छात्राएं =	14	165.93	13.30

परिकल्पनाओं का परीक्षण

परिकल्पना 1 – छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 3
छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों की तुलना

विद्यार्थी	संख्या(N)	मध्यमान(M)	मानक विचलन	t मान	सार्थकता स्तर
छात्र	80	153.76	14.37	7.265	.01 स्तर पर सार्थक है
छात्राएं	60	171.56	14.35		
df=138 के लिए .05 विश्वसनीयता स्तर पर t मान =1.96 .01 विश्वसनीयता स्तर पर t मान =2.58					

उपरोक्त सारणी से विदित होता है, कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतों का मध्यमान अधिक है।, छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमान में अन्तर t मान के पदों में 7.26 पाया गया जो .01 विश्वसनीता स्तर के सारणीकृत t मान= 2.58 से अधिक है। इससे यह कहा जा सकता है कि 99% से अधिक छात्र–छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतों का मध्यमान अधिक है।, अर्थात छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतें अधिक अच्छी पायी गयी।, सम्भवतः इसके पीछे के कारणों में हो सकता है कि छात्रों की तुलना में छात्राएं अपने अध्ययन के प्रति अधिक सक्रिय व जागरूक है इस प्रकार परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना २ – उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर पर छात्रों की अध्ययन आदतों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ।

सारणी 4
उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर पर छात्रों की अध्ययन आदतों की तुलना

		अध्ययन आदतों			
समायोजन स्तर	संख्या(N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	t मान	सार्थकता स्तर
उच्च स्तर	15	178.17	14.82	0.69	.05 स्तर पर सार्थक नहीं है
निम्न स्तर	13	175.34	16.43		
df=26 के लिए .05 विश्वसनीयता स्तर पर t मान =1.96 .01 विश्वसनीयता स्तर पर t मान = 2.59					

उपरोक्त सारिणी से पता चलता है निम्न समायोजन स्तर के छात्रों की अपेक्षा उच्च समायोजन स्तर के छात्रों की अध्ययन आदतों का मध्यमान अधिक पाया गया किन्तु यह अन्तर .05 विश्वसनीयता स्तर से सारिणीकृत t.मान (1.96) से कम पाया गया जिससे कि परिकल्पना 2 को

स्वीकृत करना पड रहा है, । इससे यह कहा जा सकता है कि 95% तक भी छात्रों की अध्ययन आदतों पर समायोजन के उच्च स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही पडता है । सम्भवतः छात्रों की अध्ययन में रूचि व जागरूकता एक जैसी है।

परिकल्पना ३– उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर पर छात्राओं की अध्ययन आदतों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारिणी 5
उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर पर छात्राओं की अध्ययन आदतों की तुलना

समायोजन स्तर	संख्या(N)	अध्ययन आदतों		t मान	सार्थकता स्तर
		मध्यमान(M)	मानक विचलन		
उच्च स्तर	11	174.50	18.09	1.314	.05 स्तर पर सार्थक नहीं है
निम्न स्तर	14	165.93	13.30		
df=26 के लिए .05 विश्वसनीयता स्तर पर t मान =1.96 .01 विश्वसनीयता स्तर पर t मान = 2.59					

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि यद्यपि सामान्य रूप में निम्न समायोजन की अपेक्षा उच्च समायोजन स्तर पर छात्राओं की अध्ययन आदतों का मध्यमान अधिक पाया गया है। किन्तु मध्यमानों के मध्य यह अन्तर 0.5 विश्वसनीयता सतर पर सारिणीकृत t–मान से कम प्राप्त हुआ है जो यह दर्शाता है कि 95% प्रतिशत तक भी उच्च एवं निम्न समायोजित छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नही विद्यमान है अर्थात छात्राओं की अध्ययन आदतों पर उच्च अथवा निम्न समायोजन स्तर का कोई विशिष्ट प्रभाव नही पडता है फलस्वरूप परिकल्पना 3 स्वीकृत की जाती है। ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए

1. छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में 99% तक अन्तर रहता है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतें अधिक अच्छी रहती है।
2. सामान्य रूप में निम्न समायोजित छात्रों अथवा छात्राओं की अपेक्षा उच्च समायोजित छात्रों अथवा छात्राओं की अध्ययन आदतें अधिक रहती है। किन्तु यह कहना 95% तक भी सार्थक नही है।
3. छात्र/छात्राओं के समायोजन स्तर के सन्दर्भ में उनकी अध्ययन आदतों का कोई सार्थक प्रभाव नही पडता है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोधकार्य राजकीय आश्रम पद्धति के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों में अपने समायोजन सतर तथा अध्ययन आदतों के प्रति जागरूकता विकसित होगी और इस सम्बन्ध में वहाँ कार्यरत शिक्षक भी पर्याप्त प्रयास करेंगे कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सुधार हो जिसमें कि विद्यार्थी अपनी परीक्षा में भी गुणात्मक सुधार कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Patel ,D.N.(1981) . The Impact of study habits of intellectually backward pupils upon their academic achievement. Quest in education (Bombay), Oct,1981, page:335-342

Dev,Madhu and Grewal, H.P.(1990). Relationship between study habits and academic achievement of undergraduate home-science find year students. Indian educational review (NCERT), July, 1990, page 7174

Rajya Guru,M(1997) ._Study-habits and locus of control as predicators of mathematics achievement. Experiments in education (Chennai), Vol.25(5),May,1997,P.108-110

Singh,OP(1998) M.(1998) . Scholastic Achievement of students as related to study-habits and Deprivation. The program of education (PUNE), Vol LXII,No.8, march,1998, p.170-172

Sarode,V.K.(1999). A study of impact of SES, study-habits and academic motivation in academic achievement of his/her secondary students of rural area. The Program of education (Pune), Vol.73, No6, Jan 1999, P. 122-124

Panchalingappa, S.N.(2006). Self-Confidence, Anxiety, study-habits and Mathematical Achievement of Under Achievers at Secondary School Level. Quest in Education (Mumbai), Vol.30(3), July, 2006, Page 25-33.

Nandita and S. Tanima(2004) . Study-Habits and attitude towards studies in relation to academic achievement. Psycho-lingua(ISSN:0377-3132), POL.34(1), PAN,2004, P.57-60

Agrwal, N.M. and Kumar, V.(2010). Study-Habits of Secondary level arts and science students. Edutrack, Vol.10(1), Sept,2010.P.37

Sutherman, S and Vasanthi, A (2011). Study-halits and Academic Achievement of XI Standard Students in Palavi Educational District. Edutrack, Vol.10(11), July, 2011, P.39-42

Rawat, Indu Bala(2017). Comarative Study of Study-halits of the students studying in governments, Aided and Non-Aided Schools. Bhartiya Shiksha Shodh Patrika(Lucknow), Vol.36, No.2, July-Dec.2017

LBP PUBLICATION